केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
संसदः अधिनियमेन स्थापितः
(प्राक्तनं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, मानितविश्वविद्यालयः, भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयाधीनः)

बहुविषयकाध्ययनम् अनुसन्धानञ्च

कार्यशालायाः पञ्चमं दिनम् (26-11-2023)

आत्म हिताय लोक तोषाय

संस्कार से संस्कृत जानता हूँ। मेरी भावभूमि भी संस्कृत है। आज विदेशी समाज को क्रियाशील समाज कहते हैं। भारतीय समाज को संज्ञा प्रधान समाज कहा जाता है। कौटिल्य भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार काम किये। भारतीय परम्परा मे ईश्वर ओर मनुष्य के बीच मे कोई नहीं है। माँ शिक्षक से कहती थी - गुरुजी हड्डी हमारी चमडी आपकी है।

चार्वाक भी ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् कहा है न कि ऋणं कृत्वा मदिरां पिबेत्। लोकायत दर्शन का भी योगदान परम्परा के विकास मे था। भारतीय ज्ञान परम्परा का उपदेश है कि - त्याग पूर्वक भोग करिए । ' आत्म हिताय लोक तोषाय ' भावना को उत्प्रेरित करती है। प्राक्शोधपाठ्यक्रम मे बैठने से

कार्यशाला मे भागग्रहण करने शोधार्थी को Research Gap समझ मे आ जाता है । सिर्फ किताबों से अनुसन्धानकार्य सम्पन्न नहीं होगा। गूगलं शरणं गच्छामि के जगह आचार्यं शरणं गच्छामि भाव सभी मे हो।

Guidance and support –

Prof. Shrinivasa Varakhedi

Honourable Vice Chancellor of CSU, Delhi

Prof. R. G. Murali Krishna

Registrar I/c, CSU, Delhi

Prof. Madhukeshwar Bhat

OSD to Hon'ble Vice-Chancellor, CSU, Delhi

प्रो. पवन शर्मा

राजनीतिशास्त्रमर्मज्ञ

चौधरी चरण सिंह विश्वविश्वद्यालय

मेरठ

प्राचीन एवं अर्वाचीन ज्ञान के समावेश की विधि/प्रक्रिया

आज प्राचीन ज्ञान आधारित अर्वाचीन ज्ञान का सृजन की आवश्यकता है। एतदर्थ योजना - नियोजन - मूल्याङ्कन इन तीनों प्रक्रियाओं की आवश्यकता है।

समावेशी भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित पाठ्यक्रम की रचना संस्कृतक्षेत्र मे भी हो। भारतीय ज्ञान परम्परा के चार स्तम्भों का अध्ययन एवं विश्लेषण अपेक्षणीय है। एकात्मता - संवेदनशीलता - न्यूनतम आवश्यकता - परिपूर्णता की ओर शाधार्थी का दृष्टिपात होना अपेक्षित है।

डा. ज्ञानेन्द्र कुमार

शिक्षा विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रातिभासिकं व्याख्यानम्

Unicode क्या ? क्यों ? कैसे ?

यूनिकोड वैश्विक सॉफ्टवेयर और सेवाओं के लिए आधार प्रदान करते हुए, लगातार और कुशल तरीके से सूचनाओं के अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान को सक्षम बनाता है। संस्कृत क्षेत्र मे भी इसकी अनिवार्यता एवं अनेक उपयोगिता है। विभिन्न भाषाओं में पाठ को क्रमबद्ध करना , संख्याओं, दिनांकों और समयों का प्रारूपण, दाएँ से बाएँ लिखी गई भाषाओं को प्रदर्शित करना आदि इसकी विशेषता है। यूनिकोड से एक ऐसा अकेला सॉफ्टवेयर उत्पाद अथवा अकेला वेबसाइट मिल जाता है, जिसे री-इंजीनियरिंग के बिना विभिन्न प्लैटफॉर्मों, भाषाओं और देशों में उपयोग किया जा सकता है। इससे डाटा को बिना किसी बाधा के विभिन्न प्रणालियों से होकर ले जाया जा सकता है। अतः शोधार्थी गण अधिकाधिक सुविधानुसार युनिकोड का प्रयोग करें।

डा. मोनाली दास

शोध संयोजिका, शोधकेन्द्र

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय

गङ्गानाथ झा परिसर , प्रयागराज